www.vitalbiotech.org/krishipravahika/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2022) वर्ष 2, अंक 5, 1-2

Article ID: 189

पॉलीहाउस मे टमाटर की पौध तैयार करना

मनीषा वर्मा[1], राजाराम बुनकर[2], सद्दाम हुसैन[3], सानिया[4] एवं राजेश मीना[5]

रिसर्च स्कॉलर, उद्यान विज्ञान विभाग, राजस्थान कृषि महाविद्यालय, महाराणा प्रताप कृषि एवम् प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर

टमाटर विश्व में सबसे ज्यादा प्रयोग होने वाली सब्जी है। इसका पुराना वानस्पतिक नाम लाइकोपोर्सिकान एस्कुलेंटम मिल है। वर्तमान समय में इसे सोलेनम लाइको पोर्सिकान कहते हैं। इसकी उत्पति दक्षिण अमेरिकी ऐन्डीज में हुआ। मेक्सिको में इसका भोजन के रूप में प्रयोग आरम्भ हुआ और अमेरिका के स्पेनिस उपनिवेश से होते हुये विश्वभर में फैल गया।

टमाटर में भरपूर मात्रा में कैल्शियम फास्फोरस व विटामिन सी पाये जाते हैं। एसिडिटी की शिकायत होने पर टमाटरों की खुराक बढ़ाने से यह शिकायत दूर हो जाती है। हालाँकि टमाटर का स्वाद अम्लीय (खट्टा) होता है लेकिन यह शरीर में क्षारीय (खारी) प्रतिक्रियाओं को जन्म देता है। लाल-लाल टमाटर देखने में सुन्दर और खाने में स्वादिष्ट होने के साथ पौष्टिक होते हैं। इसके खट्टे स्वाद का कारण यह है कि इसमें साइट्रिक एसिड और मैलिक एसिड पाया जाता है जिसके कारण यह प्रत्यम्ल (एंटासिड) के रूप में काम करता है। टमाटर में विटामिन श्एश् काफी मात्रा में पाया जाता है। यह आँखों के लिये बहुत लाभकारी है।

पॉलीहाउस तकनीक उच्च उत्पादकता के आधार पर कम क्षेत्र से अधिक उत्पादन करने मे सक्षम है। पॉलीहाउस मे खीरा , टमाटर एव शिमला मिर्च की खेती लाभप्रद है। पॉलीहाउस तकनीक से प्रति इकाई क्षेत्र से उपज 4.5 गुना अधिक मिलता है। साथ ही पॉलीहाउस मे सभी प्रकार के मौसम की खेती की जा सकती है।

प्रो- ट्रे मे पौध तैयार करना- प्रो- ट्रे प्लास्टिक की ट्रे होती है जिसमे संचयनुमा छोटे कक्ष होते है। इन कक्षो मे बीज डालकर ट्रे को नियंत्रित वातावरण मे रखकर पौध तैयार की जाती है।

प्रो- ट्रे हेतु मिश्रण तैयार करना- प्रो- ट्रे मे मृदा रहित माध्यम भरा जाता है। यह माध्यम कोकोपिथ, परलाइट एंव वर्मिकुलाइट का मिश्रण होता है। इस माध्यम को तैयार करने के लिए पॉलीथिन बिछाकर 15.20 किलो कोकोपिथ, एक तगारी परलाइट, एक तगारी वर्मिकुलाइट डाल मिश्रण मे पानी छिड़कना चाहिए।

बीज उपचार - आद्रगलन रोग से बचाव हेतु कार्बेन्डाजिम 50% (बाविस्टीन) 3 ग्राम प्रति किलो या थाइरम /3 ग्राम प्रति किलो से उपचारित करे । जैविक नियंत्रण हेतु ट्राइकोडर्मा विरडी / 2 ग्राम प्रति किलो बीज से उपचारित करे।

बुवाइर्- प्रो - ट्रे मे एक कक्ष मे 2-3 बीज डालना होता है । बीज को अंगुली से इतनी गहराई तक ही दबाए कि ऊपरी भाग तह पर दिखाई दे । इसके बाद प्रो - ट्रे पर एक पतली परत के रूप मे माध्यम डाल दिया जाता है तत्पश्चात झारे कि सहायता से हल्का पानी दिया जाता है पानी देने के बाद पॉलीथिन से प्रो -ट्रे को ढका जाता है ।

पौध का रख रखाव - बुवाई के दो दिन बाद प्रो - ट्रे के ऊपर से आवरण को हटाके एक दिन छोड़कर पानी दिया जाता है । अत 25.30 दिन मे पौध स्थातरित करने योग्य हो जाती है ।

पौध रोपण हेतु बेड तैयार करना - पॉलीहाउस मे प्लांटिंग बेड बनाने के लिए उस क्षेत्र मे कंकर , पत्थर एंव अन्य अवशेष हटाकर जमीन को समतल कर देना चाहिए । फिर वंहा पर 20 टन तालाब कि मिट्टी 1 टन सड़ी गोबर खाद प्रति 1000 वर्ग मीटर के हिसाब से मिलाकर पानी भर दे । सिंचाई के 3 - 4 दिन बाद लगभग 1 फीट ऊंची क्यारी बनानी चाहिए । मिट्टी अधिक गीली अधिक सुखी नहीं होनी चाहिए । तैयार क्यारी पर 10 सेमी. परत मिलानी चाहिए जिसमे वर्मी कम्पोस्ट -3 भाग होना चाहिए, कोकोपिथ - 1 भाग ,वर्मी कुलाइट -1 भाग ।

- लकड़ी का बुरादा -1 भाग , नीम की खली -1 भाग , और चावल की भूसी -1 भाग ।